

## मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूँ

( डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, जयपुर )



मैं हूँ अपने में स्वयं पूर्ण,  
पर डी मुँह में कुछ गंध नहीं ।  
मैं अरस अरूपी अस्पर्शी,  
पर से कुछ भी संबंध नहीं ॥

मैं रंग-राग से भिन्न भेद से  
भी मैं भिन्न निराला हूँ ।  
मैं हूँ अषष्ठ यैतन्यपिष्ठ,  
निज रस में रमने वाला हूँ ॥

मैं ही मेरा कर्ता-धर्ता,  
मुँह में पर का कुछ काम नहीं ।  
मैं मुँह में रहने वाला हूँ ,  
पर में मेरा विश्राम नहीं ॥

मैं शुद्ध, बुद्ध, अविरुद्ध अके,  
पर परिणति से अप्रभावी हूँ ।  
आत्मानुभूति से प्राप्त तत्त्व,  
मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूँ ॥

